परिचर्चा

प्रेमचंद तब और अब

31 जुलाई – 1 अगस्त, 2016

प्रेमचंद (1880–1936) को भारतीय समाज का परिचय लेखक कहा जाता है। उनका किसानों, मजदूरों, फेरीवालों कुंजड़ों, वेश्याओं, सेठों–साहूकारों, सरदारों, ज़मींदारों मिल मालिकों के सुख–दुःख का वर्णन बहुत संवेदनशील और सर्वव्यापक है। लोगों की आकांक्षाओं और अंर्तिविरोधों के सशक्त चित्रण के लिए उन्हें कथा–सम्राट कहा जाता है।

एक रिसर्चर के लिए यह एक चुनौती है कि आज को समझने के लिए, तब के प्रेमचंद के लेखन से सीखे।

31 जुलाई 2016 को प्रेमचंद की जयंती है। इस दिन संस्थान प्रेमचंद के कथा और वैचारिक साहित्य पर एक परिचर्चा आयोजित कर रहा है। परिचर्चा का विषय हैः **'प्रेमचंद तब और अब'**। डी.फिल और एम.फिल के छात्रों से अपेक्षा है कि वे प्रेमचंद का कोई निबंध अथवा कहानी को आधार बनाकर आज के सामाजिक यथार्थ की विवेचना करें। एक लेख 1500–2000 शब्दों का तैयार करें। चुनिंदा लेखों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

क्या करना हैः अपने चयनित निबंध/कहानी को हमें ईमेल द्वारा दिनांक 15 जुलाई, 2016 तक बता कर सहमति ले लें। 31 जुलाई – 1 अगस्त, 2016 को इसकी प्रस्तुति करें।

ईमेलः chaubeyjk@gmail.com

निदेशक